एक रात/ राज़ की बात

श्रीमान अभय जी.चेब्बी,
प्रो॰ चांसलर,
अलायंस विश्वविद्यालय,बंगलूरू
prochancellor@alliance.edu.in

(जीवन खोने और पाने की, बनने और बिगड़ने की, आँसू और हंसी की, खुदा और इंसान की, फूल और शूल की, मान और अपमान की, सत्ता और शासन की, जेता और विजेता की, पराजित और अपराजित की मिश्रित परिभाषा है।

जो कठिन हालात को चुनौती समझकर सामना करते हैं उन्हें जबरा जिगर कहते हैं। परंतु जो गिर कर संभलते हैं, पराजेता से विजेता बनते हैं,उन्हें बाज़ीगर कहते हैं। हर व्यक्ति के जीवन में कभी न कभी ऐसा मोड जरूर आता है, जब उसे लगता कि उसका कोई वजूद नहीं, वह व्यर्थ है। उस समय जीवन से निराश होकर, वह मौत के आगोश में जाना चाहता है।

मेरी यह कविता उन सभी हताश लोगों को समर्पित है, जिनके मन में ऐसे भाव आते हैं। इस कविता से यदि किसी एक भी व्यक्ति का मानसिक बदलाव हो सकेगा तो मेरा लिखना सफल होगा)

मैं हालातों से पराजित,

ज़िंदगी और मौत के उस चौखट पर खड़ा था और

सोच रहा था कि..

बस इतनी सी बात है, मौत से मिलने की रात है

यहाँ पैर फिसला, और वहाँ जान जाने की बात है।

सोच रहा था कि..

बस इतनी सी बात है, बनके सब पर बोझ,

मन बहुत हताश है..

कुछ और महीनों की तकलीफ, और बन जाऊँ मैं एक कल

यही मेरी चाहत है..

तभी एक अपरिचित,

उसी जिंदगी और मौत के चौखट पर खड़ा, मुझसे बोल पड़ा

मुझसे बोल पड़ा कि..

अगर इतनी सी बात है, तो कल मरना, आज में क्या खास बात है ?

तुझे मैं थोड़ा तो जान लूँ , बस एक रात की ही तो बात है..

मुझसे बोल पड़ा कि ..

अगर इतनी सी बात है, तो हरा दे मुझे एक बाजी में

दिखा दे मुझे, कि तुझमें भी कुछ बात है

तेरी जिंदगी और तेरी मौत, दोनों सौदे की बात है..

यह सुनकर मैं हैरान परेशान, इस दुविधा में पड़ गया

इस दुविधा में पड़ गया कि..

ये क्या अजीब हालात है, मन को ना कोई राहत है,

चलो झेलूँगा ये चुनौती भी, आखिर मेरी मौत भी एक सौगात है

इस दुविधा में पड़ गया कि..

ये क्या अजीब हालात है, यह हकीकत है..या खयालात है

चलो खेल लेता हूँ ये बाजी,

पता तो चले, कि मेरे मौत की भी क्या कीमत है..

यह जानकार वे मुसकुराके बोले,

कीमत से पहले नियम तो सुन ले..

जब जब मैं रखूँ तेरी सच्चाई तेरे सामने, चाह मत रखना कभी मुझसे बिछड़ने की

मत सोचना, आज नहीं है मन इस हैवान से बोलने की,

बस इच्छा है उस इंसान से मिलने की..

तो सुन ऐ पराजित ! कल कुछ ऐसा होगा, कि खुशियों से भरी तेरी दुनिया होगी

कल की बारिश बड़ी सुहावनी होगी, सबपे सिर्फ बूंदें, पर सोंधी महक तुझपे होगी..

फिज़ाओं में फूलों की ताज़गी होगी, पर उसकी खुशबू तुझपे होगी

ISSN : 2583-2948

रोशनी से भरा ये जहां होगा, पर रंगीनियत तो सिर्फ तुझमें होगी

रंगीनीयत सिर्फ तुझमें होगी..

बाज़ी का एक आखिरी कदम है,

सिक्के पे लिखा मेरा अंजाम है..

खत्म होते इस अंतिम सफ़र में,

क्या पता कहाँ मेरा मुकाम है ?..

क्या पता कहाँ मेरा मुकाम है ? क्या पता कहाँ मेरा मुकाम है ?

लेकिन सौदे का हकदार तो वो था,

सिक्का चिट नहीं, पट था..

अरे ! वो हमसफर तो मैं था, वो बाज़ीगर तो मैं था

वो बाज़ीगर तो मैं था, वो बाज़ीगर तो मैं था..